NEW ERA AGRICULTURE MAGAZINE

शरीफा की वैज्ञानिक खेती

विकास कुमार [1], धर्मेन्द्र कुमार गौतम [2], विक्की [2] एवं साक्षी [3]

परिचय:

शरीफा अनोनेसी वंश का पौधा है। इस कुल में 50 से अधिक जातियाँ है, जिनमें 8 या 10 जातियों के फल खाने योग्य होते है। इनमें से 3 या 4 जातियाँ बहुत ही अच्छी है। चेरीमोया जाति इनमें से सबसे उत्तम है एनोना चेरीमोला जो कि उष्ण जलवायु वाली है, इसकी जन्मभूमि पश्चिमी हैमिशफेयर है। हमारे देश में शरीफा या सीताफल ही अधिक लोकप्रिय है। किसी भी स्थान पर जहां कोहरा इत्यादि नही पड़ता है, यह भली भाँति उगाया जा सकता है। भारत में श्रीफा की पैदावार बहुत प्राचीन काल से की जा रही है इसकी खेती मुख्यतया बंगाल, बिहार, उडीसा, उत्तर प्रदेश तथा हैदराबाद में होती है। आन्ध्र प्रदेश में हैदराबाद के आस–पास के जंगलो में 40,000 हैक्टर के आस–पास इसके पेड़ उगे हुये है। असम एवं उत्तर प्रदेश में इसका क्षेत्रफल लगभग 3,000 हैक्टर है।

वानस्पतिक विवरण

शरीफे में नयी कोपलों का निकलना मार्च माह से प्रारम्भ होता है तथा इन्ही कोपलों पर फूल भी साथ ही साथ निकलते रहते है। फल तभी बनते है जबकि वर्षा शुरू हो जाती है। इस प्रकार इसमें फल बनने के लिये अधिक समय लगता है। इसमें सेचन होने से पहले ही फूल गिर जाते है परन्तु हाथ में स्वयं सेचन करने से इसमें काफी सफलता मिलती है। शरीफे के पेड़ों में फल का लगना दो से चार वर्ष बाद संभव होता है। यह समय तथा स्थान के ऊपर भी निर्भर करता है। कभी–कभी छः–सात वर्ष भी लग जाते है।

भूमि तथा जलवायु

शरीफा लगभग सभी प्रकार की भूमि में उगाया जा सकता है। मिट्टी तथा जलवायु के प्रति

विकास कुमार [1], धर्मेन्द्र कुमार गौतम [2], विक्की [2] एवं साक्षी [3]
[1]शोध छात्र (उद्यान) फल विज्ञान विभाग, बाँदा
[2]परास्नातक छात्र (उद्यान) फल विज्ञान विभाग, बाँदा
[3]शोध छात्रा (उद्यान) फल विज्ञान विभाग, हिसार
बाँदा कृषि प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, बाँदा
चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

यह सहिष्णु है। कंकरीली, मिट्टी से लेकर बलुई मिट्टी तक में यह सुगमतापूर्वक उत्पन्न किया जा सकता है। इसकी जड़े अधिक गहराई तक नही जाती है। ये छोटी होती है इसलिये इसको गहरी भूमि की आवश्यकता भी नही होती है। इसके लिये पानी के अच्छे निकास वाली भूमि ही अधिक उपयुक्त है।

शरीफा उष्ण कटिबन्ध और समशीतोष्ण कटिबन्ध में उगाया जाता है। अतः इसके लिये यह आवश्यक है कि जलवायु अधिक गर्म और शुष्क हो। परन्तु इसके अतिरिक्त यह समुन्द्र तट से 1000 मीटर की ऊंचाई तक ढालू व नम स्थानों पर भी उगाया जाता है। शुष्क वातावरण को सहन करने की क्षमता इसमें अधिक पाई जाती है। शरीफा अधिक ठण्डे तथा पाला वाले स्थानो में नही उगाया जा सकता है। ऐसा अनुभव हुआ है कि फूलों के निकलने के समय शुष्क जलवायु अधिक लाभदायक रहती है क्योकि इसमें सेचन क्रिया भली भाँति से हो जाती है। 50–75 सेन्टीमीटर औसत वर्षा उचित मानी जाती है।

प्रवर्धन

बीज ही इसके प्रवर्धन का मुख्य साधन है। इस निमित्त स्वस्थ बीज चुने जाते है तथा एक ढाई सेन्टीमीटर की दूरी और 1–25 सेन्टीमीटर की गहराई गमलों में लगा दिये जाते है। इसके उगने में एक माह अथवा इससे अधिक समय लगता है। इसलिये बोने के पहले बीज को पानी में दो–तीन दिन तक भिगोने के बाद बोना चाहिये। ऐसा करने से इसका कड़ा छिलका मुलायम पड़ जाता है तथा बीज की अंकुरित शक्ति बढ़ जाती है।

इसके अलावा इसका प्रवर्धन इनार्चिंग द्वारा भी किया जाता है। पर साधारणतया शरीफे का बीज ही मूलवृन्त के लिये प्रयोग में लाया जाता है। अमेरिका तथा श्रीलंका इत्यादि देशों में शील्ड बडिंग प्रयोग होता है।

पौधें लगाना

पौधों की दूरी 7X7 मीटर रखते है। पौधे छोटे होते है तथा इसमें सहनशक्ति भी अधिक होती है। इस प्रकार इनकी देख रेख करने की अधिक आवश्यकता नही रहती है। फल आने के पहले 20 से 25 किलोग्राम प्रति पेड़ के हिसाब से गोबर की खाद देना लाभदायक होता है।

किस्में

लाल शरीफा

फल, गूदा, पत्ती, तने का रंग गुलाबी लाल होता है। खुशबू स्पष्ट तथा मनमोहक, थोडा खट्टापन पाया जाता है। बीज की संख्या अधिक होती है। पर वे छोटे होते है। गूदे में क्षार की मात्रा 2.9 प्रतिशत, चीनी 19.51 प्रतिशत प्रोटीन 1.112 प्रतिशत तथा गूदा संपूर्ण फल का 49.36 प्रतिशत होता है। फल का औसत भार लगभग 260–270 ग्राम होता है। रामफल, लक्ष्मण फल, इत्यादि जातियाँ है।

उपयोग

शरीफा खाने में स्वादिष्ट तथा मीठा होता है। पकने पर गूदा पीले रंग का होता है। इस देश में फल ही सीधे प्रयोग में लाया जाता है। अन्य देशों में इसको कई प्रकार से प्रयोग किया जाता है। दूध या लेमन के साथ इसका शर्बत बहुत आकर्षक बनाया जाता है। गूदे से आइसक्रीम भी बनाई जाती है। बीजों का भी आर्थिक उपयोग पाया गया है, पता चला है। कि इसके बीजों का तेल निकालकर साबुन बनाने के काम में लाया जा सकता है। हैदराबाद में यह अनुमान लगाया गया है कि वहां प्रत्येक वर्ष 4000 टन तेल तथा 9000 टन खली बीजों द्वारा तैयार की जा सकती है। शरीफें में 100 ग्राम फल निम्नलिखित भोज्य तत्व मिलते है।

भोज्य तत्व	मात्रा
कार्बोहाइड्रेट	23-9%
प्रोटीन	1-6%
कैल्शियम	0-02%
लोहा	1 मिलीग्राम

खाद

भूमि की उर्वरता के हिसाब से खाद की मात्रा देने से फलत अच्छी होती है। शरीफा को कैल्शियम की अधिक आवश्यकता होती है। यदि खाद तथा गोबर का मिश्रण जाड़े में दिया जाये तो अधिक लाभदायक होगा। जैविक खादों के अलावा फर्टीलाइजर वाली खादें भी गुणकारी है। नत्रजन, फासफोरस तथा पोटास 3 प्रतिशत तथा 10 प्रतिशत मिश्रण अथवा 2:1 के अनुपात में अण्डों की खली और हड्डी का चूरा देना सफल खेती के लिये उत्तम रहता है। इसके अलावा बसंत ऋतु में 50 किलोग्राम सड़े गोबर की खाद प्रति वृक्ष देना भी लाभकारी है।

सिंचाई

यह पहले ही बताया जा चुका है कि शरीफा एक सहिष्णु पेड़ होता है। अतएव इसके लिये अधिक सिंचाई की आवश्यकता नही होती है, परन्तु सिंचाई करने से पेड़ में हर क्रिया ठीक से होती है। जिससे फल अच्छे प्रकार के होते है। शरीफा में फूल गर्मियों में निकलने आरम्भ होते है, अतएव यह आवश्यक है कि तीन–चार सिंचाई करना लाभदायक होगा। दिसम्बर में फल पकने शुरू होते है उस समय एक हल्की सिंचाई लाभकारी सिद्ध हुई है।

किस्में

इसकी किस्में बहुत कम है क्योकि यह बीज द्वारा पैदा किया जाता है। फल काफी छोटे–बड़े आकार में मिलते है। पैदावार में भिन्नता खासतौर से वातावरण की विभिन्नता के कारण होती है। फल अनुसंधान केन्द्र, हैदराबाद में शरीफे की किस्मों का संग्रह किया गया है, वह इस प्रकार है।

1. स्थानीय शरीफा
2. लाल शरीफा
3. मैमथ
4. ब्रिटिश गाइयना

5. बार्बहोज
6. वार्शिटन नं0 पी0 आई0–98791
7. वार्शिटन नं0 पी0 आई0–10705

- इसमें से लाल शरीफा तथा मैमथ प्रमुख जातियां है–

पौधों की कटाई–छटाई

पौधों को अच्छी दशा में रखने के लिये यह आवश्यक हो जाता है कि पौधों का ढांचा ठीक रखा जाय जिससे कि पेड़ देखने में अच्छे लगें और उनमें फलों की मात्रा अधिक प्राप्त की जा सके। इस प्रकार पेड़ो की कटाई तथा छंटाई उत्तम सिद्ध होगी। छंटाई साधारण होनी चाहिये इससे एक लाभ यह है कि पेड़ झाड़ी की शक्ल न बनाने पाये ताकि उद्यान की अतिरिक्त क्रियाऐ जैसे सिंचाई, गुडाई में सुविधा हो।

फल बढ़ाना

फलत सुधार के लिये हाथ द्वारा परागण करने से 44 से 60 प्रतिशत फूलों पर फल लगते है, 50 पी0पी0एम0 जिब्रेलिक अम्ल के छिड़काव करने से 70 प्रतिशत फूलों में फल लगते है। 2.4.–5 टी0 के 100 पी0पी0एम0 छिड़काव से फलों को गिरने से रोका जा सकता है।

फलों की तोड़ाई

फलों के तोडने का महत्वपूर्ण समय, उस समय समझना चाहिये जिस समय कलियों के जोड़ बाहर से सफेद दिखाई देने लगे, उस समय फलों को पेड़ से चुनना चाहिये। पेड़ पर अधिक परिपक्व, अवस्था में फल को नही छोडना चाहिये वरना पेड़ पर ही पककर सडना शुरू कर देते है और चिड़िया इत्यादि जानवरों से नुकसान भी हो जाता है।

बजार

बजार लाते समय बहुत ही सावधानी की आवश्यकता होती है। पकने से शीघ्र इनको बाजारों में भेज देना चाहिये। टोकरियां में ही बाजार ले जाना उचित समझना चाहिये। सूखी घास अथवा पुआल या कागज के टुकडों को टोकरी में रख देते है तथा इसमें शरीफे भरकर बाजार भेज देते है।

खाद्याशं

शरीफा खाने में मीठा, स्वादिष्ट दानेदार होता है, कुछ–कुछ खट्टापन लिये हुये रहता है। इसमें चीनी की मात्रा 15.99 से 19.15 प्रतिशत मिली है। स्टाल के अनुसार पांच जातियों का विश्लेषण निम्नलिखित है।

खाने वाले तत्वः	28.6 से 28.7 प्रतिशत
चैनी:	12.4 से 16.6 प्रतिशत
अम्ल:	0.26 से 0.65 प्रतिशत